International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 26-01-2019; Accepted: 21-02-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 66-71

भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य समस्याएं

ओमकार प्रसाद राय
सहनिदेशक, कृष्णराव शोध संस्थान, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों में श्वास के माध्यम से शरीर में पहुंच रहे मार्बल कणों से श्वास रोग दमा, क्षय रोग तथा फेफड़ो की कार्य क्षमता प्रभावित होने के कारण शिल्पकार अनेक रोगों से ग्रसित हो रहे हैं जिससे प्रस्तर शिल्प ही उनकी असमय मृत्यु का कारण बन रहा है एवं उन पर आश्रित परिवार विभिन्न कठिनाइयों का सामना करने को मजबूर है अतः प्रस्तर शिल्प की इस कला को दीर्धकाल तक बचाए रखने हेतु प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य के प्रति सजगता बनी रहे इस हेतु सुनियोजित प्रयास सभी स्तरों पर आवश्यक है अन्यथा शिल्पकारों की असमय थमती सांसे भेड़ाघाट की प्रस्तर कला के विलुप्ति का कारण सिद्ध होंगी और विश्व भेड़ाघाट की इस मनमोहक प्रस्तर शिल्प कला को खो देगा।

मूल शब्दः भेड़ाघाट पर्यटन स्थल, प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य समस्याएं।

प्रस्तावना
''पहला सुख निरोगी काया" देश में प्रचलित यह सर्वमान्य सिद्धांत है।" व्यक्ति अपने जीवन–यापन तथा परिवार के भरण–पोषण हेतु कोई न कोई आर्थिक क्रियाकलाप में अवश्य संलग्न रहता है। जिस स्थान विशेष में जैंसी परिस्थितियाँ होती हैं स्थानीय जन उनमें ढलने का गुण प्रकृति से वरदान स्वरुप प्राप्त करते हैं। अध्ययन क्षेत्र भेड़ाघाट पर्यटन स्थल में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले संगमरमर ने स्थानीय लोगों को अपने जीविकोपार्जन का साधन बनने का सुअवसर प्रदान किया तथा इससे स्थानीयजनों द्वारा लगभग 100 वर्ष पूर्व से मूर्तियों तथा अन्य मार्बल निर्मित सजावटी सामानों का निर्माण एवं विक्रय करके जीविकोपार्जन किया जा रहा है, किन्तु यही गोरा पत्थर (सॉफ्ट मार्बल) जो उनकी आजीविका का साधन है, सामग्री निर्माण के दौरान इसके कण प्रस्तर शिल्पियों की श्वास के जरिये उनके शरीर में पहुंच कर श्वास रोग तथा अन्य संबंधित रोगों को जन्म दे रहा है जिसका परिणाम शिल्पियों की असमय मृत्यु के रूप में प्रकट हो रहा है एवं उन पर आश्रित परिवार अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। प्रस्तुत प्रपत्र में इसी समस्या का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य
प्रस्तुत प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य समस्याओं को जानना और उनके समाधान नियोजन प्रस्तुत करना है, जिससे इस पर्यटन स्थल में संगमरमर की शिल्पकला की निरंतरता बनी रहे और कला का अबाध विकास होता रहे तथा पीढियों से चली आ रही मूर्तिनिर्माण संस्कृति बाधित न हो और मनमोहक सुन्दरता के निर्माण का लाभ विश्व को प्राप्त होता रहे मुख्य उद्देश्य –
1) संगमरमर शिल्प निर्माणकर्ता प्रस्तर शिल्पकारों के स्वास्थ्य पर प्रभाव।
2) शिल्पकारों हेतु उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएँ।
3) प्रस्तर शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति।
4) प्रस्तर शिल्पकारों के स्वास्थ्य सुधार हेतु सुझाव।

अध्ययन विधि
प्रस्तुत अध्ययन "भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य समस्याएं" प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित हैं। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन शिल्पकारों से सीधे संपर्क स्थापित करके सुविचारित एवं सुस्पष्ट
साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से न्यायदर्शों से प्रश्न पूछकर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के 20 चयनित शिल्पकार परिवारों के लगभग 100 सदस्यों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जो विभिन्न जाति एवं वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तथा शिल्पकला के विभिन्न रूपों में अग्रणी हैं। प्रस्तर शिल्पकार परिवारों का चयन यादृच्छिक नमूना प्रतिचयन विधि (Random Sampling Method) की सांख्यिकी नमूनाकरण विधि (Statistical Sampling methods) द्वारा किया गया है। जबकि द्वितीयक आंकड़े सरकारी विभाग, नगर पंचायत, केंद्रीय सरकार द्वारा जारी आंकड़े एवं सांख्यिकी पत्रिका आदि से प्राप्त किए गए हैं।

अध्ययन क्षेत्र
विश्व प्रसिद्ध प्राकृतिक पर्यटन स्थल भेड़ाघाट देश के मध्य में स्थित 'हृदय राज्य' के नाम से विख्यात मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले का एक नगर है, जिसकी भौगोलिक स्थिति 23°8′ उत्तर और 79°48′ पूर्वी देशांतर के मध्य राज्य की जीवन रेखा कही जाने वाली नदी नर्मदा के तट पर स्थित है, जो पूर्णमासी की रात को संगमरमरी चट्टानों के बीच से कलकल करती नर्मदा को निहारता एक अलौकिक अनुभव देता है। सैकड़ों फिट ऊँचे संगमरमर के खड्डों के बीच प्रवाहित नर्मदा का भेड़ाघाट में देखने लायक स्थान है जहाँ विश्व प्रसिद्ध प्राकृतिक पर्यटन स्थल धुआंधार जलप्रपात, संगमरमर शैलों की बनी कई किलोमीटर लम्बी अद्भुत गार्ज और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चौसठ योगिनी का मंदिर दर्शनीय है। वही संगमरमर तथा लाल पत्थरों पर मूर्तियों तथा अन्य साज–सामानों का निर्माण करते शिल्पकारों के परिवार तथा विभिन्न शिल्पों के परिसज्जन (Finishing) कार्य में लगे बच्चे, बूढ़े तथा महिलायें सुंदर निर्माण में पूर्ण तन्मयता से

कार्यरत देखे जा सकते हैं। वास्तव में भेड़ाघाट पर्यटन क्षेत्र का वास्तविक विकास उस समय प्रारंभ हुआ जब 1978 में विशेष क्षेत्र प्राधिकरण भेड़ाघाट का गठन हुआ तथा इस पर्यटन क्षेत्र को विश्व मानचित्र में प्रतिष्ठापित करने का प्रयास आरम्भ हुआ, वर्तमान में यह क्षेत्र विश्व के पर्यटन स्थलों में अपना नाम दर्ज करवा चुका है, वहीं यहाँ के शिल्पकार देश के विभिन्न भागों जैसे दिल्ली की प्रगति

अध्ययन क्षेत्र का अवस्थिति मानचित्र

मैदान प्रदर्शनी, हरियाणा का सूरजकुंड मेला, बम्बई प्रदर्शनी तथा दिल्ली की मीना बाजार प्रदर्शनी जो देश में लगने वाली सबसे बड़ी प्रदर्शनियों में से हैं इनमें अपनी शिल्पकला का लोहा मनवाकर कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। पर्यटन क्षेत्र भेड़ाघाट में जबलपुर नगर से अच्छी सड़क द्वारा पहुंच मार्ग उपलब्ध है तथा जबलपुर के डुमना एयरपोर्ट तथा जबलपुर रेलवे स्टेशन से आवागमन हेतु सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं।

प्रस्तर शिल्पकारों की स्वास्थ्य समस्याएं :– "विभिन्न शिलाओं को तराशकर उनसे सुन्दर मूर्तियों, खिलौनों तथा अन्य साज–सामग्री का निर्माण करना प्रस्तर शिल्पियों का एक विशेष गुण है।" शिल्प निर्माण के समय भेड़ाघाट पर्यटन स्थल में शिल्प निर्माण हेतु उपयोग में लाए जा रहे गोरा पत्थर 'सॉफ्ट मार्बल' से निकलने वाले कण प्रस्तर शिल्पियों के शरीर में श्वास के माध्यम से प्रवेश कर रहे हैं जिसके कारण श्वास रोग तथा उससे संबंधित अन्य

रोग जैसे फेफड़े के रोग दमा, क्षय रोग आदि से शिल्पि परिवार प्रभावित हो रहे हैं। श्वास रोग जो गोरा पत्थर के कणों के शरीर में पहुँचकर जमने के कारण होता है उसकी प्रकृति शीत होती है तथा इसके कारण फेफड़ो की कार्य क्षमता प्रभावित होती है परिणाम स्वरुप शरीर में ऑक्सीजन कम मात्रा में पहुंच पाती है जिसके कारण प्रस्तर शिल्पकार अनेकानेक रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। जैसा कि अध्ययन क्षेत्र के प्रस्तर शिल्पकारों से चर्चा के दौरान पता लगा कि मार्बल के कण सफेद होने के कारण एक्सरे में भी नजर नहीं आते लेकिन वे शरीर में जमें होते हैं और रोगी श्वास रोग को शीत रोग मानकर इलाज करवाते रहते हैं। डॉक्टर भी एक्सरे में इन कणों के न आने के कारण रोग को ठीक से नहीं समझ पाते एवं ठीक उपचार न मिलने के कारण पहले दमा फिर टी.बी. होने के बाद व्यक्ति मानसिक तनाव में आ जाता है तथा कुछ ही दिनों में शरीर कमजोर हो जाता है एवं अनेक रोग उसे घेर लेते हैं, दूसरी और अब वह शिल्प निर्माण से दूर होता जाता है जिसके कारण परिवार को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ऐंसी कई समस्याओं में पड़कर वह और कमजोर होता रहता है क्योकि काम बंद करने के कारण उसकी आवक नहीं होती और इलाज के लिये पर्याप्त पैसे नहीं होने के कारण रोग विकराल रूप धारण कर लेता है तथा प्रस्तर शिल्पकार असमय ही काल के गाल में समा जाता है। रोग के बढ़ने का दूसरा कारण यहाँ के निवासी अनेक मत–मान्यताओं को मानते हैं तथा कुछेक अंधविश्वास भी हैं। इनके पूर्वज जड़ी–बूटियों तथा मंत्र चिकित्सा से रोगों पर विजय प्राप्त कर लेते थे लेकिन प्रकृति में बढ़ते प्रदूषण ने जड़ी–बूटियों के प्रभावों को भी कम किया है तथा मंत्र चिकित्सा जो तरंगो पर आधारित होती है आज इतने अधिक यंत्रो का विकास हो गया है की उनसे निकलने वाली तरंगो के मध्य मंत्रो की तरंगो का प्रभाव जैसे खो ही जाता है और यह चिकित्सा भी लगभग अप्रभावी सिद्ध हो रही है लेकिन लोग इसी चिकित्सा का प्रयोग करते रहते हैं एवं रोग ठीक न होने के कारण बढता जाता है तथा विकराल रूप धारण कर लेता है और शिल्पकार असमय मृत्यु का शिकार हो जाता है। स्वास्थ्य की परिभाषा विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1948 में इस प्रकार दी है – "Health is a state of a complete physical, mental and social well-being and not merely an absence of disease or infirmity." अतः स्वस्थ्य होना केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ्य होना न होकर मानसिक एवं सामाजिक रूप से भी पूर्णतः स्वस्थ्य होना है।

आंकड़ों का विष्लेषण और तार्किक परीक्षण :– परम्परागत चिकित्सा विधि एवं अंधविश्वासों के कारण अनेकानेक रोगों की चिकित्सा नहीं हो पाती, समाज में कई पीढियों से चली आ रही जड़ी–बूटियों से चिकित्सा आज बढते प्रदूषण के कारण उनकी कम होती शक्तियों के परिणाम स्वरुप निष्प्रभावी सिद्ध हो रही है वहीं रोगों का इलाज झाड–फूंक से हो जायेगा यह अंधविश्वास प्राचीनकाल से ही समाज में व्याप्त है लेकिन रोग उससे ठीक तो नहीं होते बल्कि ठीक समय पर चिकित्सा नहीं मिलने के कारण रोग बढते जाते हैं। तब भी उपयुक्त चिकित्सा न की जाए तो रोग विकराल रूप धारण कर लेता है और शरीर कमजोर होकर स्वयं ही अनेक रोगों का घर बन बैठता है। दूसरी बात रोग की सही समझ या जानकारी नहीं होनें से भी रोग अनियंत्रित हो जाता है तथा व्यक्ति अधिक बीमार हो जाता है और असमय मृत्यु का शिकार हो जाता है, प्रस्तुत प्रपत्र के अध्ययन क्षेत्र में प्रमुखतः यही दो समस्याएं अध्ययन के दौरान प्रकाश में आई हैं इन समस्याओं तथा अन्य बातों को विभिन्न सारणियों तथा चित्रों के माध्यम से समझाने का प्रयत्न किया गया ळें

सारणी क्रमांक 1: प्रस्तर षिल्पकारों का प्रकार

क्रमांक	प्रकार	परिवारों की संख्या	प्रतिषत
1	वंशानुगत	07	35
2	कला प्रेमी	04	20
3	पेशेवर व्यवसायी	00	00
4	अन्य कार्य न मिलने के कारण शिल्पकार्य में संलग्न	09	45
योग	04	20	100

सारणी क्रमांक 01 का विश्लेषणः सारणी क्रमांक 01 में भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों के प्रकार का विश्लेषण किया गया है इस पर्यटन क्षेत्र के प्रस्तर शिल्पकारों का अध्ययन करने हेतु साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है की सर्वाधिक 45 प्रतिशत प्रस्तर शिल्पकार परिवार शिल्पकर्म में इसलिए संलग्न हैं क्योंकि उनके पास इस रोजगार के आलावा और कोई रोजगार नहीं है। वहीं 35 प्रतिशत परिवार वंशानुगत इस कार्य में लगे है। इन वंशानुगत कार्य में लगे शिल्पियों ने शिल्पकला की कोई विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की है बल्कि अपने परिवार के बड़े–बुजुर्गों द्वारा किये जा रहे कार्यों को देखकर तथा उनसे ही सीखकर इस कार्य को कर रहे हैं। 20 प्रतिशत शिल्पकार कला प्रेमी होने के कारण शिल्पकार के रूप में कार्यरत हैं जिससे इनका शौक भी पूरा हो जाता है तथा आजीविका भी चल जाती है। लेकिन साक्षात्कार के दौरान यह बात उभरकर आई है कि यदि इन्हें शिल्पकार्य के अलावा कोई और रोजगार प्राप्त हो तो वह उस रोजगार को तत्परता से अपना लेंगे जिसका प्रमुख कारण प्रस्तर शिल्पियों को होने वाली स्वास्थ्य समस्याएं, कम आय, तथा गोरा पत्थर की समय समय पर उचित मूल्य पर अनुपलब्धता है।

साक्षात्कार के दौरान 65 वर्ष की उम्र के चन्नूलाल अपनी पत्नी के साथ मूर्तियों को परिसज्जित ;थ्पदपीपदह) करने में लगे थे, उनका कहना था कि अन्य रोजगार नहीं होने के कारण हम इस कार्य में लगे हैं। इस कार्य को करने से शरीर बहुत अधिक थक जाता है थकान से होने वाले दर्द के कारण कई बार रात में नींद भी नहीं आती और मूर्तियों को परिसज्जित करने के कार्य से बहुत कम आय प्राप्त होती है जिससे परिवार का भरण–पोषण करने में भी बहुत कठिनाई आती है। एक मध्यम आकार की मूर्ति जिसकी फिनिशिंग करने में 2–3 दिन लग जाते हैं उससे 200–300 की आय प्राप्त होती है। यदि हम यह कार्य न करें तो कोई और रोजगार भी नहीं है जिससे अपना तथा परिवार का पेट पाल सकें। अतः प्रस्तर शिल्पियों का एक बड़ा भाग केवल इस कारण से इस कार्य में लगा है कि उन्हें इसके आलावा और कोई कार्य स्थानीय स्तर पर उपलब्ध नहीं है।

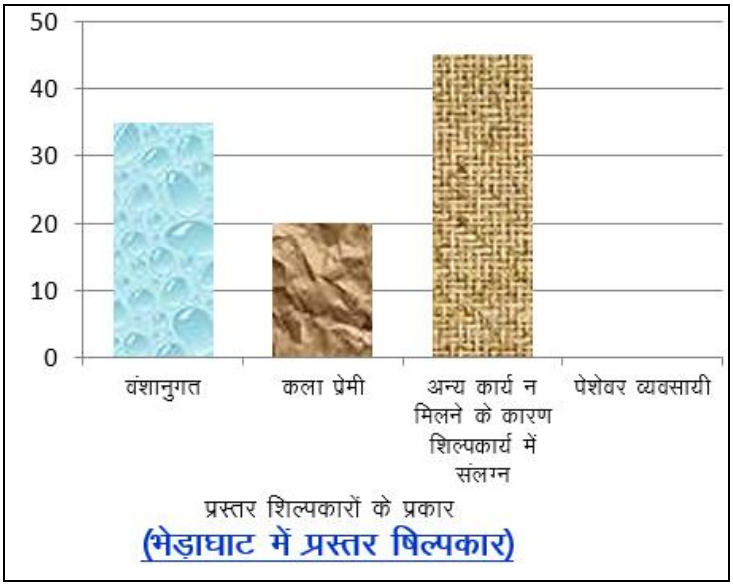

सारणी क्रमांक 2: प्रस्तर षिल्पकारों का जातिगत विवरण

क्रमांक	जाति	वर्ग	परिवारों की संख्या	प्रतिषत
1	भूमिया आदिवासी	अनुसूचित जनजाति	10	50
2	मुस्लिम	अन्य पिछड़ा वर्ग	04	20
3	ब्राह्मण	सामान्य	02	10
4	ढ़ीमर	अन्य पिछड़ा वर्ग	04	20
योग	4	03	20	100

सारणी क्रमांक 02 का विश्लेषण :– सारणी क्रमांक 02 में दिये गये आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि प्रस्तर शिल्पकार्य में विभिन्न जाति, वर्गों एवं धर्मों के लोग कार्यरत हैं। सर्वाधिक 50 प्रतिशत परिवार भेड़ाघाट में आदिकाल से निवासरत भूमिया आदिवासी अनुसूचित जनजाति वर्ग के हैं ये अपने को हिन्दू धर्म का अनुयायी मानते हैं तथा पूजा पद्धति में मूर्तिपूजा का अनुसरण करते हैं। इनके द्वारा हिन्दू धर्म की आस्था के प्रतीक देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बनाई जाती हैं साथ ही अन्य सामग्री, साजो–सामान जो गोरा पत्थर तथा लाल पत्थर से निर्मित किए जाते हैं का भी निर्माण इस वर्ग के लोग करते हैं। वहीं मुस्लिम धर्म के 20 प्रतिशत परिवार भी शिल्पकला के कार्य में संलग्न हैं और ये कलाकार धार्मिक मान्यताओं से परे हटकर हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियों का भी निर्माण करते हैं। वहीं मछली पकड़ने वाली जाति ढ़ीमर (बर्मन) जो इस धार्मिक स्थल में निवासरत है अपनी धार्मिक भावनाओं के कारण मछली मारने का कार्य न करके प्रस्तर शिल्पकला से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। भेड़ाघाट में ब्राह्मण परिवारों में भी शिल्पकार्य होता है। साक्षात्कार के दौरान एक प्रस्तर शिल्पकार प्यारेलाल आदिवासी उम्र 70 वर्ष ने बताया की हम यह कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी पूर्वजों से करते आ रहे हैं। वहीं मुस्लिम परिवार के शिल्पियों ने भी अपने पूर्वजों के प्रस्तर शिल्पकार होने की परम्परा को आगे बढाया है।

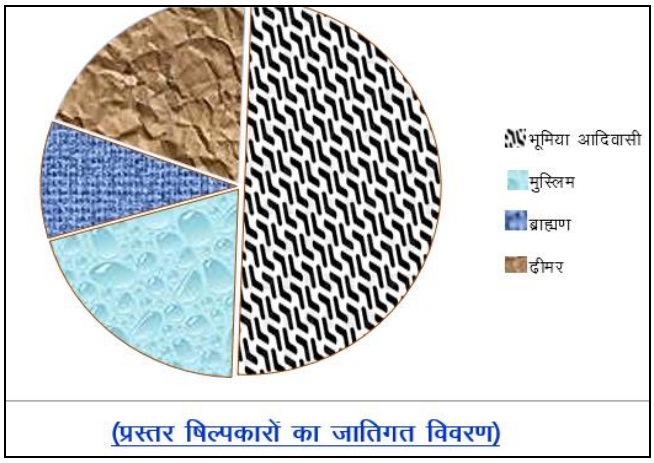

सारणी क्रमांक 3: प्रस्तर षिल्पकार परिवारों की वार्षिक आय

क्रमांक	आय का स्तर (रूपयों में)	परिवारों की संख्या	परिवारों का प्रतिशत
1	60 हजार से कम	00	00
2	60 हजार से 1.50 लाख	08	40
3	1.50 लाख से 2.50 लाख	06	30
4	2.50 लाख से अधिक	06	30
योग	4	20	100

सारणी क्रमांक 03 का विश्लेषण :– सारणी क्रमांक 03 में भेड़ाघाट पर्यटन स्थल के प्रस्तर शिल्पकारों की वार्षिक आय का विवरण दिया गया है जिसका विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि कोई भी परिवार 60 हजार रुपये से कम की वार्षिक आय प्राप्त नहीं करता। 40 प्रतिशत परिवारों की वार्षिक आय का स्तर 60 हजार रुपये से 1.50 लाख रुपये के मध्य है। 30 प्रतिशत परिवार 1.50 लाख रुपये से 2.50 लाख रुपये के मध्य वार्षिक आय का अर्जन करते हैं। तथा 30 प्रतिशत परिवार 2.50 लाख रुपये से अधिक की वार्षिक आय अर्जित करते हैं। लेकिन ये परिवार इतनी आय के बाद भी बचत नाममात्र ही कर पाते हैं

क्योकिं कच्चे माल की खरीदी, बीमारियों में होने वाला खर्च तथा परिवार के पालन–पोषण में अपनी कमाई का अत्यधिक भाग खर्च कर देते हैं। परिवार का कमाने वाला मुखिया यदि रोगग्रस्त हो जाये तो परिवार आर्थिक तंगी का सामना करता है और स्थानीय स्तर पर अच्छी गुणवत्ता की स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण शहर में इलाज करवाने जाते हैं। प्रतिदिन कार्य करके अपने परिवार का भरण पोषण करने वाला मुखिया जब चिकित्सा हेतु शहर जाता है तब सर्वप्रथम उसे अपना कार्य बंद करनापड़ता है जिससे परिवार की दैनिक आय तुरंत बंद हो जाती है वहीं चिकित्सा में लगने वाला खर्च की गई बचत से होने लगता है तथा कुछ ही समय में उनके द्वारा की गई छोटी सी बचत भी खर्च हो जाती है। यदि चिकित्सा लम्बे समय तक चले तो न तो वह शिल्प कार्य करके धन अर्जित कर पाता है और उससे की गई बचत के समाप्त होने पर कड़ी आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। साक्षात्कार के दौरान 80 वर्षीय बुजुर्ग 22 सदस्यों के परिवार के मुखिया नन्दलाल वर्मा का कहना था कि जब श्वास रोग पहली बार हुआ तभी काम बंद कर देना चाहिए था लेकिन काम करते रहने के कारण दमा हुआ और बाद में क्षय रोग हो गया जिसके इलाज में पूरी बचत पूंजी खर्च हो गई जब काम न करने के कारण परिवार आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा था तभी इलाज हेतु रुपयों की भी जरुरत थी और रुपये न होने के कारण ठीक से इलाज भी नहीं हो पाया और इसके अलावा यहाँ कोई अन्य कार्य भी नही है जिसको करके परिवार का भरण पोषण किया जा सके अतः मजबूरी में यह कार्य करना पड़ा और आज बीमारियों से ग्रसित होकर सांसे गिन रहे हैं।

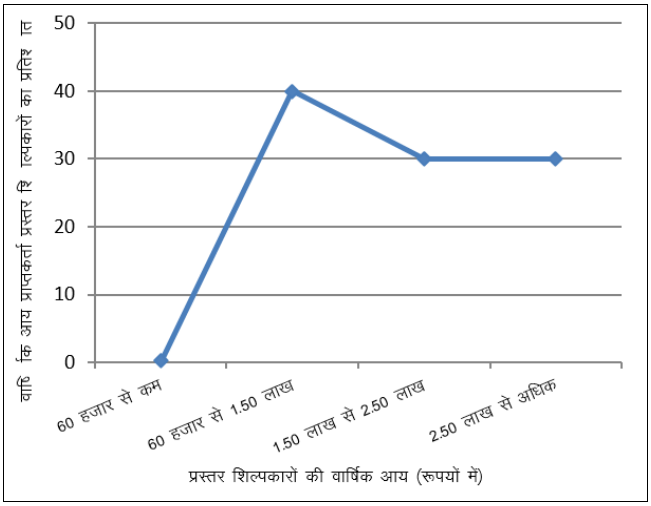

सारणी क्रमांक 04: प्रस्तर षिल्पकारों की वैधिक स्थिति

क्रमांक	वैधिक स्थिति	संख्या	प्रतिषत
1	संगठित शिल्पकार	00	00
2	असंगठित शिल्पकार	20	100
3	अपंजीकृत शिल्पकार	00	00
4	पंजीकृत शिल्पकार	20	100

सारणी क्रमांक 04 का विश्लेषण :– सारणी क्रमांक 04 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि पर्यटन क्षेत्र भेड़ाघाट के सभी प्रस्तर शिल्पकार भेड़ाघाट नगर पंचायत में शिल्पी के रूप में पंजीकृत हैं। लेकिन 100 प्रतिशत प्रस्तर शिल्पकार असंगठित हैं तथा कार्य में लगे हैं। इनकी मेहनत का मूल्य निर्धारित करने वाला कोई भी संगठन कार्यरत नहीं है इसी कारण इन्हें अपनी मेहनत का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता। इन्हें अपने शिल्प का व्यापारियों द्वारा जो भी मूल्य दे दिया जाता है उसी को लेकर संतोष करना पड़ता है जिसका कारण तथा परिणाम दोनों इनकी दयनीय आर्थिक स्थिति है यदि शिल्पकार व्यापारियों को तैयार शिल्प न बेंचे तो दिन–प्रतिदिन का खर्च चलाना मुश्किल हो जाता है और तैयार शिल्प सीधे खरीदने वाले पर्यटक कब खरीदेंगे इसका भी तो पता नही होता अतः इनकी कमजोर आर्थिक स्थिति इन्हे अपने प्रस्तर शिल्प को उचित मूल्य प्राप्त करने में बाधक है। इस पर्यटन क्षेत्र में एक संगठन धुआंधार शिल्पकार संघ 1984–85 से कार्यरत है, जिसके लगभग 200 सदस्य हैं किन्तु इसमें सक्रियता तथा वास्तविक कार्यपद्धति का आभाव है जिसके कारण यह संगठन शिल्पकारों के लिए जैसा कार्य होना चाहिए वैसा कार्य नहीं कर पा रहा है दूसरा कारण इस संगठन के पदाधिकारियों में गुटबाजी, संगठन में व्यापारियों का प्रभावी होना आदि कारणों से यह अपनी मूल भावना से हट गया है। अतः एक अच्छे सक्रिय संगठन का आभाव नजर आता है। प्रस्तर शिल्पकार मध्यप्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम तथा खादी ग्रामोघोग आदि में भी पंजीकृत हैं लेकिन यहां से नियमित सहयोग प्राप्त न होकर केवल खानापूर्ति होती रहती है। यहाँ शिल्पकारों में अशिक्षा तथा संगठन की भावना का आभाव है जिसके कारण उन्हें उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता तथा प्रशिक्षण का आभाव भी इनके आर्थिक पिछड़ेपन का कारण है।

निष्कर्ष :– "शरीर खलु सार मिधम" 'जीवन का प्रथम धन स्वस्थ्य काया स्वस्थ्य मन' इस पंक्ति को जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को महत्व देना चाहिये क्योंकि शरीर के रोगी होने से कोई भी कार्य उच्च गुणवत्ता से नहीं हो पाता और कहा जाता है कि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थय मन निवास करता है। अध्ययन क्षेत्र में होने वाले शीत रोग, क्षय रोग, आदि के लिए उचित स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध कराकर असमय मृत्यु से प्रस्तर शिल्पकारों को बचाया जा सकता है तथा नियमित स्वास्थ्य परीक्षण हेतु जनजागरण अभियान चलाकर उन्हें सावधानियाँ बरतने हेतु प्रशिक्षित किया जा सकता है। प्रशिक्षण संस्थान खोलकर तथा उन्नत औजारों को उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाकर उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाये तथा शरीर में मार्बल के कण श्वास के माध्यम से न जाएँ इस हेतु उच्च गुणवत्ता के मास्क उपलब्ध करवाए जा सकते हैं तथा इनका प्रयोग अनिवार्य किया जाना चाहिए। साप्ताहिक, मासिक स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाये जाएँ तथा अस्वस्थ्य होने से बचने का प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना चाहिए साथ ही सरकार द्वारा स्थानीय स्तर पर बार–बार तथा अधिकांश प्रस्तर शिल्पियों को होने वाले रोग श्वास रोग, दमा, क्षय रोग की स्थानीय परिस्थिति के अनुसार शोध करवाकर उचित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

संदर्भ

1. अयाधी, राकेश "विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण भेड़ाघाट का गठन", रेवांचल पत्रिका, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण भेड़ाघाट, जबलपुर। 1991
2. अहूजा, राम "सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली। 2003
3. गौतम, भूपेन्द्र "श्रद्धा और सौंदर्य का संगम भेड़ाघाट", शिवम आफसेट, जबलपुर। 1991
4. जिला सांख्यिकी पुस्तक जबलपुर। 2015
5. बेंगड़, अमृतलाल "सौंदर्य सरिता नर्मदा" रेवांचल पत्रिका, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण भेड़ाघाट, जबलपुर।
6. "भारत" प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली। 2017
7. "मध्यप्रदेश सन्दर्भ", मध्यप्रदेश जनसंपर्क का प्रकाशन,जनसंपर्क संचालनालय, जनसंपर्क भवन, टेगौर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल। 2012
8. "मध्यप्रदेश सन्देश, जनसंपर्क संचालनालय, जनसंपर्क भवन,

बाणगंगा, भोपाल।
9. शुक्ला, राजेश "पर्यटन भूगोल", अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली। 2009
10. शर्मा, श्रीकमल"मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन", मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल। 2015
11. शर्मा, आर. के. "भेड़ाघाट नामकरण एवं किवदंतियाँ", रेवांचल पत्रिका, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण भेड़ाघाट, जबलपुर। 1991
12. सहाय, शिवरूप "पर्यटन – सिद्धांत और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन", मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लो रोड, दिल्ली। 1991
13. साहू, दिनेश "भेड़ाघाट एक परिचय" रेवांचल पत्रिका, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण भेड़ाघाट, जबलपुर। 1991